हम समाज से अलग थोड़ी हैं। सामाजिक कार्य का आशय है कि हम अपना काम कर रहे हैं। माता संतान का लालन-पालन करती है तो वह कहती है कि मैंने अपना काम किया। पुत्र भी बड़ा होकर अपने माता-पिता की सेवा करता है तो वह भी कहता है कि मैं अपना काम कर रहा हूं। नानाजी कहा करते थे कि सार्वजनिक कार्यकर्ता अपना काम नहीं करता, बल्कि अपनों के लिए काम करता है। नानाजी राजनीति के सारे लाभ छोड़कर यहां रहने के लिए आए। भारत में पांच जगह पर काम किसलिए शुरू किया। उन्हें पता नहीं था कि वह जो काम कर रहे हैं, उसके लिए हम ग्रामोदय मेला लगाकर उनकी पुण्यतिथि मनाएंगे। इस आशा के साथ उन्होंने ये सब नहीं किया था। उन्होंने तो अपनो के लिए ये सब काम किया था। इसी अपनत्व के भरोसे पर समाज चलता है। सदियों से उपेक्षित दुर्बल समाज में इससे थोड़ी सी जान आ गई तो वह स्वावलंबी होने लगा। समाज जाग गया तो तीन-तीन पंचवर्षीय योजनाओं में जो काम नहीं हो सका, वह यहां तीन साल में खड़ा हो गया। हमारे विकास का यही रास्ता है। गांव का विकास भारत का विकास है। इस तरह की बात कहते सब हैं, लेकिन गांव के विकास में करना ज़्या है? यह समझ नहीं पाते। आज के गांव में दो बातें हैं। प्राचीन परज़्परा वाले गांव जहां की कला, संस्कृति, आत्मियता वाले संबंधों को निभाने की कला अभी गांवों में बची हुई है। कारण, पुराने जमाने के गांव स्वयंपूर्ण होते थे। देश के अच्छे विद्वान वहां होते थे, जिनकी चर्चा दुनिया में होती थी। शहरों की प्रयोगशाला यहां नहीं थी। हमारे यहां के किसानों ने कृषि यांत्रिकी तैयार की है। जिसमें आज भी कई चमत्कार हो सकते हैं। गौ का उपयोग जैसे हमारे देश ने किया, वैसा किसी ने नहीं किया। हमने गौ माता कहकर उससे संबंध जोड़ा। हम सृष्टि का उपभोग नहीं करते, बल्कि आवश्यकता अनुसार उसका उपयोग करते हैं। इससे प्रकृति का संतुलन बना रहता है। हमें विकास की इसी अवधारणा को लेकर आगे बढ़ते रहना है। हमें किसी भी स्थिति में पूरे आत्मविश्वास के साथ बिना रूके, बिना थके चलते रहना है।

(परमपूज्य सरसंघचालक डा. मोहनरावजी भागवतजी का चित्रकूट में आयोजित तीन दिवसीय ग्रामोदय मेला के समापन कर किया गया मार्गदर्शन)